शांकर वेदान्त में माया का स्वरूप

प्रीति वर्मा

आचार्य शंकर के दर्शन में माया और अविद्या का प्रयोग एक ही अर्थ में हुआ है। जिस प्रकार आत्मा और ब्रह्म में तादात्म्य है, उसी प्रकार माया और अविद्या अभिन्न है। शंकर ने माया, अविद्या, अभ्यास, अध्यारोप, भ्रान्ति, विवर्त, भ्रम, नामरूप, अव्यक्त, मूलप्रकृति आदि शब्दों का एक ही अर्थ में प्रयोग किया है। परन्तु बाद के वेदान्तियों ने माया और अविद्या में भेद किया है। उनका कहना है कि माया भावात्मक है, जबकि अविद्या निषेधात्मक है। माया को भावात्मक इसलिए कहा जाता है कि माया द्वारा ब्रह्म सम्पूर्ण विश्व का प्रदर्शन करता है। माया विश्व को प्रस्थापित करती है। इसके विपरीत अविद्या ज्ञान के अभाव को संकेत करने के कारण निषेधात्मक है। माया और अविद्या में दूसरा अंतर यह है कि माया ईश्वर को प्रभावित करती है जबकि अविद्या जीव को प्रभावित करती है। माया और अविद्या में तीसरा अंतर यह है कि माया का निर्माण मूलतः सत्वगुण से हुआ है, जबकि अविद्या का निर्माण सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से हुआ है। माया का स्वरूप सात्विक है, परन्तु अविद्या का स्वरूप त्रिगुणात्मक है।